वियद्भृगुस्थमर्धीराबिन्दुमद्बीजमीरितम्। चन्द्रसूर्योपरागे तु पात्रे रुक्ममये क्षिपेत्॥५०॥
दुग्धं वचां ततो मन्त्री कण्ठमात्रोदके स्थितः।
स्पर्शाद्विमोक्षपर्यन्तं प्रजपेन्मन्त्रमादरात्॥५१॥
पिबेत्तत्सर्वमचिरात्तस्य सारस्वतं भवेत्। ज्योतिष्मतीलताबीजं दिनेष्वेकैकवर्द्धितम्॥५२॥
अष्टोत्तरशतं यावद्भक्षयेदभिमन्त्रितम्। सरस्वत्यवतारोऽसौ सत्यं स्याद्भुवि मानवः॥५३॥

"वियद्भृगुस्थमर्धीराविन्दुमद्बीजमीरितम्" (इसका मन्त्रोद्धार विज्ञजन करें)—इस बीज मन्त्र का सूर्य किंवा चन्द्रग्रहण काल में स्वर्णपात्र में गौ दुग्ध छोड़े। स्वयं कण्ठ पर्यन्त जल में खड़ा होकर ग्रहण स्पर्श से मोक्ष पर्यन्त उपर्युक्त मन्त्र का जप सादर करते हुये अन्त में वह दुग्ध पीये। उस व्यक्ति को त्वरित वाक्सिद्धि मिलती है। १०८ मालकंगनी का बीज लेकर मन्त्राभिमंत्रित करे। पहले दिन एक खाये। दूसरे दिन दो। इस प्रकार एक-एक वृद्धि करते भक्षण करे। ऐसा मानव पृथिवी पर निश्चित रूप से सरस्वती का अवतार कहा जायेगा।।५०-५३।।

किं बहूक्तेन विप्रेन्द्र मनोरस्य प्रसादतः।
सर्ववेदागमादीनां व्याख्याता ज्ञानवान् भवेत्॥५४॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने सनत्कुमारविभागे तृतीयपादे हयग्रीवोपासना-निरूपणं नाम द्विसप्ततितमोऽध्यायः।।७२।।

हे विप्रवर! अधिक कहना व्यर्थ है। इस मन्त्र के प्रभाव से वह व्यक्ति सर्ववेदागम प्रभृति का व्याख्याता तथा ज्ञानवान् हो जाता है।।५४।

।।७२वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖

अथ त्रिसप्ततितमोऽध्यायः

लक्ष्मण तथा राम मन्त्र जपविधि

सनत्कुमार उवाच

अथ रामस्य मनवो वक्ष्यन्ते सिद्धिदायकाः। येषामाराधनान्मर्त्यास्तरन्ति भवसागरम्॥१॥
सर्वेषु मन्त्रवर्येषु श्रेष्ठं वैष्णवमुच्यते। गाणपत्येषु सौरेषु शाक्तशैवेष्वभीष्टदम्॥२॥
वैष्णवेष्वपि मन्त्रेषु राममन्त्राः फलाधिकाः।
गाणपत्यादिमन्त्रेभ्यः कोटिकोटिगुणाधिकाः॥३॥

विष्णुशय्यास्थितो बह्निरिन्दुभूषितमस्तकः। रामाय हृदयान्तोऽयं महाघौघविनाशनः॥४॥
सर्वेषु राममन्त्रेषु ह्यतिश्रेष्ठः षडक्षरः। ब्रह्महत्यासहस्राणि ज्ञाताज्ञातकृतानि च॥५॥
स्वर्णस्तेयसुरापानगुरुतल्पायुतानि च। कोटिकोटिसहस्राणि ह्युपपापानि यानि वै॥६॥
मन्त्रस्योच्चारणात्सद्यो लयं यान्ति न संशयः।
ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छन्दो रामश्च देवता॥७॥
आद्यं बीजं च हृच्छक्तिर्विनियोगोऽखिलाप्तये।
षड्दीर्घभाजा बीजेन षडङ्गानि समाचरेत्॥८॥

देवर्षि सनत्कुमार कहते हैं—अब मैं सिद्धिप्रद राम मन्त्र का वर्णन करता हूं, जिसकी आराधना मात्र से मनुष्य भवसागर पार कर लेता है। सभी श्रेष्ठ मन्त्रों में से वैष्णव मन्त्र को उत्तम कहा गया है। गणपति, सूर्य, शक्ति तथा शैव मन्त्रों की तुलना में विष्णु मन्त्र ही कल्याणप्रद तथा श्रेष्ठतम कहा गया है, तथापि उन विष्णुमन्त्रों में भी राममन्त्र सर्वाधिक फलप्रद है। गणपति प्रभृति मन्त्रों से इसका फल कोटिगुणित है। विष्णु शय्यास्थित अग्नि के मस्तक पर इन्द्रभूषित हों तदनन्तर रामाय नमः कहे। यह महापाप नाशक है अर्थात् "रां रामाय नमः" मन्त्रोद्धार है। सभी राममन्त्रों में षडक्षर मन्त्र सर्वश्रेष्ठ है। ज्ञानतः किंवा अज्ञानतः की गई हजारों ब्रह्महत्या, जाने-अनजाने किये पाप, स्वर्णचोरी, मद्यपान, गुरु पत्नीगमन, ऐसे हजारों-करोड़ों पाप-उपपाप जो कुछ भी हैं, वे राममन्त्रोंच्चारण से तत्काल नष्ट हो जाते हैं। यह निःसंदिग्ध है। इस मन्त्र के ऋषि हैं ब्रह्मा। गायत्री छन्दः है। राम देवता हैं। रं बीज है। हृत् शक्ति है। सर्वप्राप्ति हेतु इसका उपयोग होता है। षड्दीर्घ मात्रायुक्त बीज से षडङ्ग न्यास करे।।१-८।।

ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्येहृन्नाभ्योर्गुह्यपादयोः। मन्त्रवर्णान्क्रमान्न्यस्य केशवादीन्प्रविन्यसेत्॥९॥
पीठन्यासादिकं कृत्वा ध्यायेद्धृदि रघूत्तमम्।
कालाम्भोधरकान्तं च वीरासनसमास्थितम्॥१०॥
ज्ञानमुद्रां दक्षहस्ते दधतं जानुनीतरम्। सरोरुहकरां सीतां विद्युदाभां च पार्श्वगाम्॥११॥
पश्यन्तीं रामवक्त्राब्जं विविधाकल्पभूषिताम्।
ध्यात्वैवं प्रजपेद्वर्णलक्षं मन्त्री दशांशतः॥१२॥
कमलैर्जुहुयाद्वह्नौ ब्राह्मणान्भोजयेत्ततः। पूजयेद्वैष्णवे पीठे विमलादिसमन्विते॥१३॥

तब ब्रह्मरन्ध्र, भ्रूमध्य, हृत्, नाभि, गुह्य, चरणद्वय में मन्त्रवर्ण का न्यास सम्पन्न करके केशवादि न्यास करे। तत्पश्चात् पीठन्यासादि करके हृदय में रघुश्रेष्ठ राम का ध्यान करे। वे श्याम वर्ण मेघवत् कान्तियुक्त वीरासनासीन, ज्ञानमुद्राधारी है। उन्होंने जानु के बीच दाहिने हाथ में ज्ञान मुद्राधारण किया है। उनके पार्श्व में स्थित सीता विद्युत् के मान आभा वाली हैं। वे विविध आभूषणों से सज्जित हैं तथा हाथों में उन्होंने कमल धारण किया है। वे निरन्तर राम के मुखकमल को देख रही हैं। इस प्रकार ध्यानोपरान्त वह मन्त्रज्ञ साधक छः लक्ष मन्त्र जप करे तथा साठ हजार होम कमल पुष्प से करे। इसके अनन्तर ब्राह्मण को भोजन कराने के पश्चात् विमलादि समन्वित वैष्णवपीठ पर पूजा करे।।९-१३।।

मूर्तिमूलेन सङ्कल्प्य तस्यामावाह्य साधकः।
सीतां वामे समासीनां तन्मन्त्रेण प्रपूजयेत्॥१४॥

वहां मूल मन्त्र से मूर्त्ति का संकल्प करके उन देव का आवाहन करना चाहिये। राम का तथा उनके वाम भाग में आसीना सीता का आवाहन करना चाहिये तथा उस मन्त्र से उनकी पूजा करे।।१४।।

रमासीतापदं ङेन्तं द्विठान्तो जानकीमनुः।
अग्नेः शार्ङ्गं च सम्पूज्य सरान्पार्श्वद्वयेऽर्चयेत्॥१५॥
केशरेषु षडङ्गानि पत्रेष्वेतान्समर्चयेत्। हनुमन्तं च सुग्रीवं भरतं सविभीषणम्॥१६॥
लक्ष्मणाङ्गदशत्रुघ्नान् जाम्बवन्तं क्रमात्पुनः। वाचयन्तं हनुमन्तमग्रतो धृतपुस्तकम्॥१७॥
यजेद्भरतशत्रुघ्नौ पार्श्वयोर्धृतचामरौ। धृतातपत्रं हस्ताभ्यां लक्ष्मणं पृष्ठतोऽर्चयेत्॥१८॥

यह जानकी मन्त्र है—"रमा सीता ङेन्तं द्विठान्त" अर्थात् स्वाहा इसका मन्त्रोद्धार करके स्वाहा का योग करे। यही जानकी मन्त्र है। तब अग्नि तथा शार्ङ्गधनुष की पूजा करने के उपरान्त उभय पार्श्व में बाण पूजन करे। केशरों पर छः अंग देवता पूजन करके पत्र पर हनुमान्, सुग्रीव, भरत, विभीषण, लक्ष्मण, अंगद, शत्रुघ्न तथा जाम्बवान का पूजन करने के उपरान्त राम के आगे पुनः हाथ में पुस्तक लेकर पढ़ते हुये हनुमान का, प्रभु के उभय पार्श्व में चामरधारी भरत तथा शत्रुघ्न की तथा प्रभु के पृष्ठभाग में छत्रधारी लक्ष्मण की पूजा करे।।१५-१८।।

ततोऽष्टपत्रे सृष्टिं च जपन्तं विजयं तथा। सुराष्ट्रं राष्ट्रपालं च अकोपं धर्मपालकम्॥१९॥
सुमन्तं चेति सम्पूज्य लोकेशानायुधैर्युतान्।
एवं रामं समाराध्य जीवन्मुक्तः प्रजायते॥२०॥

तत्पश्चात् अष्टदल पर सृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रपाल, अकोप, धर्मपाल, सुमन्त की पूजा के उपरान्त लोकपाल तथा उनके आयुधों की पूजा करे। इस प्रकार सविधि राम की आराधना करने वाला जीवन्मुक्त हो जाता है।।१९-२०।।

चन्दनाक्तैः प्रजुहुयाज्जातीपुष्पैः समाहितः। राजवश्याय कमलैर्धनधान्यादिसिद्धये॥२१॥
लक्ष्मीकामः प्रजुहुयात्प्रसूनैर्विल्वसम्भवैः। आज्यक्तैर्नीलकमलैर्वशयेदखिलं जगत्॥२२॥
घृताक्तशतपर्वीभिर्दीर्घायुश्च निरामयः।
रक्तोत्पलानां होमेन धनं प्राप्नोति वाञ्छितम्॥२३॥
पालाशकुसुमैर्हुत्वा मेधावी जायते नरः।
तज्जप्ताम्भः पिबेत्प्रातर्वत्सरात्कविराड् भवेत्॥२४॥
तन्मन्त्रितान्नं भुञ्जीत महारोगप्रशान्तये। रोगोक्तौषधहोमेन तद्रोगान्मुच्यते क्षणात्॥२५॥

इसके पश्चात् इसी मन्त्रोच्चारण के साथ जो साधक समाहित चित्त से चन्दन लिप्त जातीपुष्पों से होम करता है, वह राजवशीकरण करता है। कमलपुष्प द्वारा होम से धन-धान्यादि की सिद्धि होती है। लक्ष्मीकामी

बिल्व पुष्पों से होम करे। जो व्यक्ति घृत लिप्त नीलकमल से होम करता है, समस्त संसार उसके वशीभूत हो जाता है। घृतलिप्त दूर्वादल से होम करने वाला दीर्घायु तथा आरोग्य लाभ करता है। रक्त कमल से होम करने वाला वांछित धनलाभ करता है। पलाशपुष्प से हवन करने वाला मेधावी हो जाता है। एक वर्ष पर्यन्त जो इस मन्त्र से मन्त्रित जल पीता है, वह महाकवि होता है। इस मन्त्र से अभिमंत्रित अन्नाहार करने वाले की भयानक व्याधि का भी नाश हो जाता है। जिस रोग हेतु जिस औषधि का विधान है, उससे हवन करने वाले की वह व्याधि नष्ट हो जाती है।।२१-२५।।

नदीतीरे च गोष्ठे वा जपेल्लक्षं पयोव्रतः। पायसेनाज्ययुक्तेन हुत्वा विद्यानिधिर्भवेत्॥२६॥
परिक्षीणाधिपत्यो यः शाकाहारो जलान्तरे। जपेल्लक्षं च जुहुयाद्बिल्वपुष्पैर्दशांशतः॥२७॥
तदैव पुनराप्नोति स्वाधिपत्यं न संशयः। उपोष्य गङ्गातीरान्ते स्थित्वा लक्षं जपेन्नरः॥२८॥

जो व्यक्ति नदी के किनारे अथवा गौशाला के मात्र दुग्धहार पर रहकर एक लाख यह मन्त्र जपता है तथा दस हजार होम खीर एवं घृत से करता है, वह विद्यानिधि होगा। जिस राजा का आधिपत्य क्षीण हो, वह शाकाहारी रहे तथा जल के बीच खड़े होकर एक लाख मन्त्र जप करे। तदनन्तर दस हजार होम बिल्वपुष्पों से करे। वह अपना आधिपत्य पुनः पाता है। इसमें सन्देह नहीं है। मनुष्य उपवासी रहकर गंगातट पर एक लाख मन्त्र जप करे।।२६-२८।।

दशांशं कमलैर्हुत्वा विल्वोत्थैर्वा प्रसूनकैः। मधुरत्रयसंयुक्तैराज्यश्रियमवाप्नुयात्॥२९॥
माघमासे जले स्थित्वा कन्दमूलफलाशनः। लक्षं जप्त्वा दशांशेन पायसैर्जुहुयाद्वसौ॥३०॥
श्रीरामचन्द्रसदृशः पुत्रः पौत्रोऽपि जायते।
अन्येऽपि बहवः सन्ति प्रयोगा मन्त्रराजके॥३१॥

तदनन्तर वह दस हजार होम कमल को त्रिमधुर से युक्त करके उससे करे अथवा बिल्व पुष्पों से करे। उस व्यक्ति को राज्यश्री की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य माघ मास में जलस्थ रहकर कन्द-मूलफल पर ही निर्वाह कर एक लाख जप करता है, तदनन्तर दस हजार होम पायस से अग्नि में करता है, उसे श्रीराम जैसे पुत्र-पौत्र प्राप्त होते हैं। इस महामन्त्र के अनेक अन्य प्रयोग भी कहे गये हैं।।२९-३१।।

किन्तु प्रयोगकर्तॄणां परलोको न विद्यते।
षट्कोणं वसुपत्रं च तद्बाह्यार्कदलं लिखेत्॥३२॥
षट्कोणेषु षडर्णानि यन्त्रस्य विलिखेद् बुधः।
अष्टपत्रे तथाष्टार्णांल्लिखेत्प्रणवगर्भितान्॥३३॥
कामबीजं रविदले मध्ये मन्त्रावृताभिधाम्। सुदर्शनावृतं बाह्ये दिक्षु युग्मावृतं तथा॥३४॥
वज्रोल्लसद्भूमिगेहं कन्दर्पांकुशपाशकैः।
भूम्या च विलसत्कोणं यन्त्रराजमिदं स्मृतम्॥३५॥

तथापि उनके प्रयोग से कर्त्तागण को परलोक लाभ नहीं होता। पहले षट्कोण बनाकर वहां अष्टपत्र लिखकर उसके बाहर द्वादशदल बनाये। बुद्धिमान् व्यक्ति षट्कोण में वहां षडर्ण यन्त्र बनाये। अष्टपत्र में अष्टवर्ग

को लिखकर प्रणव को लिखे। रविदल में कामबीज क्लीं लिखकर मध्य में मन्त्रावृत्त, (द्वादशदल) बाहर सुदर्शन मन्त्र से आवृत करे तथा बाहर दिशाओं का युग्म स्वर से आवृत्त करे। भूपुर को बनाकर वहां वज्र, कन्दर्प, अंकुश पाश युक्त करे। ऐसा भूगृह कोण युक्त यन्त्र यन्त्रराज कहा जाता है।।३२-३५।।

भूर्जेऽष्टगन्धैः संलिख्य पूजयेदुक्तवर्त्मना। षट्कोणेषु दलार्काब्जान्यावेष्टवृतयुग्मतः॥३६॥
केशरेष्वष्टपत्रस्य स्वरद्वंद्वं लिखेद् बुधः। बहिस्तु मातृकां चैव मन्त्रं प्राणनिधायनम्॥३७॥

भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही से यन्त्र बनाकर पूर्ववत् उसकी पूजा करे। षट्कोण में द्वादश दल कमल बनाकर उसे वृत्तयुग्म से वेष्टित करना चाहिये। अष्टपत्र केसरों पर द्वन्द्व स्वरों (२-२ स्वर) लिखे। उसके बाहर मातृकाओं का प्राणनिधायन मन्त्र लिखे।।३६-३७।।

यन्त्रमेतच्छुभे घस्त्रे कण्ठे वा दक्षिणे भुजे।
मूर्ध्नि वा धारयेन्मन्त्री सर्वपापैः प्रमुच्यते॥३८॥
सुदिने शुभनक्षत्रे सुदेशे शल्यवर्जिते। वश्याकर्षणविद्वेषद्रावणोच्चाटनादिकम्॥३९॥
पुष्यद्वयं तथादित्यार्द्रामघासु यथाक्रमम्। दूर्वोत्था लेखनी वश्ये तथाकृष्टौ करञ्जजा॥४०॥
नरास्थिजा मारणे तु स्तम्भेन राजवृक्षजा।
शान्तिपुष्ट्यायुषां सिद्ध्यै सर्वापच्छमनाय च॥४१॥

मंत्रज्ञ साधक इस यन्त्र को शुभ तिथि पर कण्ठ, दक्षिण भुजा अथवा शिर पर धारण करके सभी पापों से रहित हो जाता है। उत्तम दिन, शुभनक्षत्र में, शुभ देश में कंटकादिरहित स्थान में इसे धारण करे। इसे आर्द्रा पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा तथा मघा नक्षत्र काल में धारण करे। इसे वशीकरणार्थ दूर्वा की लेखनी से, आकर्षणार्थ कटकरंज की लेखनी से, मारणार्थ अस्थि लेखनी से, स्तम्भनार्थ राजवृक्ष की लेखनी से लिखे। इस यन्त्र धारण से शान्ति पुष्टि तथा आयुवृद्धि होती है। सभी पापों का शमन हो जाता है।।३८-४१।।

विभ्रमोत्पादने चैव शिलायां विलिखेद् बुधः।
खरचर्मणि विद्वेषे ध्वजे तूच्चाटनाय च॥४२॥
शत्रूणां ज्वरसन्तापशोकमारणकर्मणि। पीतवस्त्रं लिखित्वा तु साधयेत्साधकोत्तमः॥४३॥

जहां शत्रु की बुद्धि को भ्रान्त करना हो, तब सुधी व्यक्ति इसे शिला पर बनाये। जहां विद्वेषण करना हो, उसे गधे की खाल पर लिखे। उच्चाटनार्थ ध्वजा पर लिखे। शत्रु पर ज्वर, सन्ताप शोकादि मारण कर्म करना हो, तब इसे पीले वस्त्र पर लिखकर सिद्ध करे।।४२-४३।।

वश्याकृष्टौ चाष्टगन्धैः सम्पूज्य च यथाविधि।
चिताङ्गारादिना चैव ताडनोच्चाटनादिकम्॥४४॥
विषार्कक्षीरयोगेन मारणं भवति ध्रुवम्। लिखित्वैवं यन्त्रराजं गन्धपुष्पादिभिर्यजेत्॥४५॥

वशीकरण तथा आकर्षणार्थ अष्टगन्ध से यथाविधि यन्त्र की पूजा करे। ताड़न तथा उच्चाटनार्थ चिता के कोयले से यन्त्र लेखन करे। मारणार्थ विष तथा मदार के दुग्ध को आपस में मिलाकर यन्त्र बनाये। निश्चितरूप से कार्य सिद्ध होगा। श्रेष्ठ साधक यन्त्रराज बनाकर उसकी अर्चना गन्ध पुष्पादि से करे।।४४-४५।।

त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा धारयेत्साधकोत्तमः। बीजं रामाय ठद्वन्द्वं मन्त्रोऽयं रसवर्णकः॥४६॥
महासुदर्शनमनुः कथ्यते सिद्धिदायकः। सुदर्शनमहाशब्दाच्चक्रराजेश्वरेति च॥४७॥
दुष्टान्तकदुष्टभयानकदुष्टभयङ्करम्। छिन्धि द्वयं भिन्धि युग्मं विदारय युगं ततः॥४८॥
परमन्त्रान् ग्रस द्वन्द्वं भक्षयद्वितयं ततः। त्रासय द्वितयं वर्मास्त्राग्निजायान्तिमो मनुः॥४९॥

अष्टषष्ट्यक्षरः प्रोक्तो यन्त्रसंवेष्टने त्वयम्।
तारो हृद्भगवान् ङेन्तो ङेन्तो हि रघुनन्दनः॥५०॥

रक्षोघ्नविशदायान्ते मधुरादिप्रसन्न च। वरदानायामितान्ते नुतेजसे पदमीरयेत्॥५१॥

बालायान्ते तु रामाय विष्णवे हृदयान्तिमः।
सप्तचत्वारिंशदर्णो मालामन्त्रोऽयमीरितः॥५२॥

उसे त्रिलौह से वेष्टित करके साधकोत्तम पहने। "रां रामाय स्वाहा" यह रसवर्णक मन्त्र है। अब सर्वसिद्धिप्रद महासुदर्शन मन्त्र भी कहा जाता है। "सुदर्शन महाचक्रराजेश्वर दुष्टान्तकदुष्टभयानक दुष्ट भयंकर छिन्दि-छिन्दि भिन्धि-भिन्धि विदारय विदारय परमन्त्रान् ग्रस ग्रस भक्ष भक्ष त्रासय त्रासय हुं फट् स्वाहा"। यह ६८ अक्षरों का महासुदर्शन मन्त्र है। इससे यन्त्र को वेष्ठित करे, तब धारण करे। "ॐ भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्न विशद मधुरादि प्रसन्न वरदानायामिततेजे बालाया रामाय विष्णवे नमः।" यह ४७ अक्षर का मालामन्त्र है।।४६-५२।।

विश्वामित्रो मुनिश्चास्य गायत्री छन्द ईरितम्।
श्रीरामो देवता बीजं ध्रुवः शक्तिश्च ठद्वयम्॥५३॥

षड्दीर्घस्वरयुग्मायाबीजेनाङ्गानि कल्पयेत्। ध्यानपूजादिकं सर्वमस्यपूर्ववदाचरेत्॥५४॥

अयमाराधितो मन्त्रः सर्वान्कामान्प्रयच्छति।
स्वकामसत्यवाग्लक्ष्मीताराढ्यः पञ्चवर्णकः॥५५॥
षडक्षरः षड्विधः स्याच्चतुर्वर्गफलप्रदः।
ब्रह्मा सम्मोहनः शक्तिर्दक्षिणा मूर्तिसंज्ञकः॥५६॥
अगस्त्यः श्रीशिवः प्रोक्तास्ते तेषां मुनयः क्रमात्।
अथवा कामबीजादेर्विश्वामित्रो मुनिः स्मृतः॥५७॥
छन्दः प्रोक्तं च गायत्री श्रीरामो देवता पुनः।
बीजशक्तिराधमान्त्यं मन्त्रार्णैः स्यात्षडङ्गकम्॥५८॥

बीजैः षड्दीर्घयुक्तैर्वा मन्त्रार्णान्पूर्ववन्न्यसेत्। ध्यायेत्कल्पतरोर्मूले सुवर्णमयमण्डपे॥५९॥
पुष्पकाख्यविमानान्तः सिंहासनपरिच्छदे। पद्मे वसुदले देवमिन्द्रनीलसमप्रभम्॥६०॥

इसके ऋषि हैं विश्वामित्र, छन्दः है गायत्री, देवता हैं श्रीराम, बीज है ध्रुव तथा शक्ति है स्वाहा। षड्दीर्घ युक्त बीज से अंगन्यास करे। ध्यान पूजादि सभी ध्यान पूजादि पूर्ववत् करे। इस मन्त्राराधन से सभी

कामना पूर्ण हो जाती है। ''स्वकाम, सत्य, वाग्, लक्ष्मी, ताराड्य पंचवर्णक'' —(यह मन्त्र संकेत है। इसका विज्ञजन मन्त्रोद्धार करें।) यह षडक्षर मन्त्र है। षड्विध है तथा चतुर्वग फलप्रद है। इसके ऋषि क्रमशः हैं— ब्रह्मा, संमोहन शक्ति, दक्षिणामूर्त्ति अगत्स्य, श्रीशिव अथवा कामबीजादि के ऋषि विश्वामित्र कहे गये हैं। छन्दः गायत्री। देवता हैं श्रीराम स्वाहा बीज शक्ति है। मन्त्राक्षरों से षडङ्गन्यास करके षड्दीर्घ युक्त बीजमन्त्र से पूर्ववत् न्यास करना चाहिये। अब ध्यान कहते हैं कल्पवृक्ष के मूल में स्वर्णमय मण्डप में स्थित पुष्पक विन के अन्तर्गत् अष्टपद्ममय सिंहासन पर स्थित देवता इन्द्रनील मणि के समान प्रभावान् हैं।।५३-६०।।

वीरासनसमासीनं ज्ञानमुद्रोपशोभितम्। वामोरुन्यस्तयद्धस्तसीतालक्ष्मणसेवितम्॥६१॥

रत्नाकल्पं विभुं ध्यात्वा वर्णलक्षं जपेन्मनुम्।
यद्वा स्मारादिमन्त्राणां जयाभं च हरिं स्मरेत्॥६२॥
यजनं काम्यकर्माणि सर्वं कुर्यात्षडर्णवत्।
रामश्च चन्द्रभद्रान्तो ङेनमोन्तो ध्रुवादिकः॥६३॥

मन्त्रावष्टाक्षरौ ह्येतौ तारान्त्यौ चेन्नवाक्षरौ। एतेषां यजनं सर्वं कुर्यान्मन्त्री षडर्णवत्॥६४॥

ये देवता वीरासनासीन हैं। ज्ञानमुद्रा से शोभित हैं। उनके वाम उरु पर सीता बैठीं हैं। राम ने सीता के कन्धों पर हाथ रखा है। वे लक्ष्मण से सेवित हैं। वे प्रभुराम रत्नों के द्वारा शोभित भी हैं। ऐसे प्रभु का ध्यान करके ६ लाख मन्त्र जप करे अथवा साधक स्मार आदि मन्त्रों के देवता हरि का स्मरण करे। इस षडक्षर मन्त्र जपानुष्ठान से मनुष्य यजन तथा काम्यकर्मादि सब सम्पन्न कर सकता है। ॐ रामचन्द्राय नमः अथवा ॐ रामभद्राय नमः ये उभय अष्टाक्षरमन्त्र हैं। यदि इनके अन्त में भी प्रणव (ॐ) का योग हो जाये, तब यह नवाक्षर होगा। साधकजन इन मन्त्रों का यजन षडक्षरमन्त्र की ही विधि से करे।।६१-६४।।

जानकीवल्लभो ङेन्तो द्विठान्तः कवचादिकः।
दशार्णोऽयं महामन्त्रो विशिष्टोऽस्य मुनिः स्वराट्॥६५॥
छन्दश्च देवता सीता पतिबीजं तथादिमम्।
स्वाहा शक्तिश्च कामेन कुर्यादङ्गानि षट्क्रमात्॥६६॥

शिरोललाटभ्रूमध्यतालुकण्ठेषु हृद्यपि। नाभ्यंघ्रिजानुपादेषु दशार्णान्विन्यसेन्मनोः॥६७॥

'हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा' दस अक्षरात्मक महामन्त्र है। इसके ऋषि हैं वसिष्ठ। छन्दः है स्वराट् छन्द। देवता हैं सीतापति, बीज है हुं, शक्ति है स्वाहा। इस मन्त्र से मन्त्री साधक षडङ्गन्यास करे। शिर, ललाट, भ्रूमध्य, तालु, कण्ठ, हृदय, नाभी, चरण, जानु का इस मन्त्र के दशाक्षरों से न्यास करे।।६५-६७।।

अयोध्यानगरे रत्नचित्रसौवर्णमण्डपे। मन्दारपुष्पैराबद्धविताने तोरणान्विते॥६८॥

सिंहासनसमासीन पुष्पकोपरि राघवम्। रक्षोभिर्हरिभिर्देवैः सुविमानगतैः शुभैः॥६९॥

संस्तूयमानं मुनिभिः प्रह्वैश्च परिसेवितम्।
सीतालङ्कृतवामाङ्गं लक्ष्मणेनोपशोभितम्॥७०॥

श्यामं प्रसन्नवदनं सर्वाभरणभूषितम्। एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्री वर्णलक्षं समाहितः॥७१॥

दशांशः कमलैर्होमो यजनं च षडर्णवत्।
रामो ङेन्तो धनुष्पाणिर्ङेन्तोऽन्ते वह्निसुन्दरी॥७२॥

अब ध्यान करना चाहिये कि अयोध्या नगरी में रत्नमय सुवर्ण मण्डप मन्दारपुष्पों से सज्जित वितान तथा तोरण से युक्त हैं। वहां पुष्पक पर राघव सिंहासनासीन हैं। उत्तम शुभ विमानों पर आये देवता तथा रक्षोगण उनकी स्तुति में निरत हैं। वे मुनियों द्वारा सेवित प्रभु हैं। उनके वामांग में सीता शोभायमान हैं। वे लक्ष्म की उपस्थिति से भी उपशोभित हैं। श्रीराम श्यामवर्ण, प्रसन्नाकृति, सर्वाभरण भूषित हैं। मन्त्रज्ञ साधक ऐसा ध्यान करके समाहित होकर दस लक्ष जप करे। एक लाख होम कमल पुष्पों द्वारा जपान्त में करे। शेष प्रक्रिया षडक्षर मन्त्रवत् होगी। तदनन्तर "रामाय धनुष्पाणये स्वाहा" दशाक्षर मन्त्र है।।६८-७२।।

दशाक्षरोऽयं मन्त्रोऽस्य मुनिर्ब्रह्मा विराट् पुनः।
छन्दस्तु देवता प्रोक्तो रामो राक्षसमर्दनः॥७३॥
आद्यं बीजं द्विठः शक्तिर्बीजेनाङ्गानि कल्पयेत्।
वर्णन्यासं तथा ध्यानं पुरश्चर्यार्चनादिकम्॥७४॥
दशाक्षरोक्तवत्कुर्याच्चापबाणधरं स्मरेत्। तारो नमो भगवते रामान्ते चन्द्रभद्रकौ॥७५॥
ङेन्तावर्काक्षरौ मन्त्रौ ऋषिध्यानादि पूर्ववत्।
श्रीपूर्वं जयपूर्वं च तद्द्विधा रामनाम च॥७६॥
त्रयोदशाक्षरो मन्त्रो मुनिर्ब्रह्मा विराट् स्मृतम्।
छन्दस्तु देवता प्रोक्तो रामः पापौघनाशनः॥७७॥
षडङ्गानि प्रकुर्वीत द्विरावृत्त्या पदत्रयैः। ध्यानार्चनादिकं सर्वं ह्यस्य कुर्याद्दशार्णवत्॥७८॥

इसके ऋषि हैं ब्रह्मा, छन्दः है विराट्, देवता हैं राक्षसमर्दन राम। इसका बीज है 'रां', स्वाहा शक्ति है। इस बीज से अंगन्यास करे। वर्णन्यास, पुरश्चरण तथा पूजनादि पूर्वकथित दशाक्षर मन्त्रवत् करे। इसका ध्यान है—चाप-बाणधारी श्रीराम। 'ॐ नमो भगवते रामचन्द्राय' अथवा 'ॐ नमो भगवते रामचन्द्राय' ये दो द्वादशाक्षर मन्त्र हैं। इनके ऋषि ध्यानादि पूर्व दशाक्षरवत् हैं। "श्रीराम जयराम जय जय राम" त्रयोदश अक्षर मन्त्र है। इसके ऋषि हैं ब्रह्मा। छन्दः है विराट् तथा देवता सर्वपापनाशक श्रीराम हैं। मन्त्र के तीन पदों को दोहरा कर षडङ्गन्यास करे। इसका भी ध्यान पूजन दशाक्षरवत् होगा।।७३-७८।।

तारो नमो भगवते रामायान्ते महापदम्। पुरुषाय हृदन्तोऽयं मनुरष्टादशाक्षरः॥७९॥
विश्वामित्रो मुनिश्छन्दो धृती रामोऽस्य देवता।
तारो बीजं नमः शक्तिश्चन्द्राक्ष्यब्ध्यग्निषड्भुजैः॥८०॥
वर्णैर्मन्त्रोत्थितैः कुर्यात्षडङ्गानि समाहितः। निश्शाणभेरीपटहशङ्खतुर्यादिनिःस्वनैः॥८१॥
प्रवृत्तनृत्ये परितो जयमङ्गलभाषिते। चन्दनागरुकस्तूरीकर्पूरादिसुवासिते॥८२॥

अब "ॐ नमो भगवते रामाय पुरुषाय नमः" अष्टादशाक्षर मन्त्र वर्णन किया जाता है। इसके ऋषि

हैं विश्वामित्र, धृति छंद है, देवता हैं श्रीराम। ॐ बीज तथा नमः शक्ति है। साधक को चाहिये कि समाहित स्थिति में इस मन्त्र के अष्टादश अक्षर से षडङ्गन्यास सम्पन्न करे। तब ढोल, भेरी, पटह, शंख, तुरही आदि के शब्दों से तथा जय-जयकार रूप मंगल घोष से तथा नृत्यादि से उत्सव करे। चन्दन, अगुरु, कस्तूरी कर्पूर आदि से सुवासित करे।।७९-८२।।

नानाकुसुमसौरभ्यवाहिगन्धवहान्विते। देवगन्धर्वनारीभिर्गायन्तीभिरलंकृते।।८३।।
सिंहासने समासीनं पुष्पकोपरि राघवम्। सौमित्रिसीतासहितं जटामुकुटशोभितम्।।८४।।
चापबाणधरं श्यामं ससुग्रीवविभीषणम्। हत्वा रावणमायान्तं कृतत्रैलोक्यरक्षणम्।।८५।।
एवं ध्यात्वा जपेद्वर्णं लक्षं मन्त्री दशांशतः। घृताक्तैः पायसैर्हुत्वा यजनं पूर्ववच्चरेत्।।८६।।

नाना सुगन्ध से चर्चित विविध गन्धमय पुष्पों से सज्जित गीतगायन करती देव-गन्धर्व नारीगण से विभूषित पुष्पक विमान पर सिंहासनासीन राघव प्रभु का ध्यान करे। लक्ष्मण तथा सीता सहित, जटामुकुटमण्डित वे प्रभु चाप-बाणधारी श्यामवर्ण हैं तथा सुग्रीव, विभीषण वहां विराजित हैं। उन्होंने युद्धार्थ आते हुये रावण का वध करके त्रैलोक्य रक्षण किया है। इस प्रकार मन्त्रज्ञ साधक एक लक्ष मन्त्र जप करके दस हजार होम घृतयुक्त पायस से करे। पूजाविधि पूर्ववत् है।।८३-८६।।

प्रणवो हृदयं सीतापतये तदनन्तरम्। रामाय हनयुग्मान्ते वर्मास्त्राग्निप्रियान्तिमः।।८७।।
एकोनविंशद्वर्णोऽयं मन्त्रः सर्वार्थसाधकः।
विश्वामित्रो मुनिश्चास्यानुष्टुप्छन्द उदाहृतम्।।८८।।
देवता रामभद्रो जं बीजं शक्तिर्नम इति।
मन्त्रोत्थितैः क्रमाद्वर्णैस्ततो ध्यायेच्च पूर्ववत्।।८९।।
पूजनं काम्यकर्मादिसर्वमस्य षडर्णवत्। तारः स्वबीजं कमला रामभद्रेति सम्पठेत्।।९०।।
महेष्वासपदान्ते तु रघुवीर नृपोत्तम। दशास्यान्तकशब्दान्ते मां रक्षदेहि सम्पठेत्।।९१।।
परमान्ते मे श्रियं स्यान्मन्त्रो बाणगुणाक्षरः।
बीजैर्वियुक्तो द्वात्रिंशदर्णोऽयं फलदायकः।।९२।।

'ॐ नमः सीतापतये रामाय हन हन हुं फट् स्वाहा' यह १९ अक्षरों वाला मन्त्र सर्वार्थ साधक है। (यहां मन्त्राक्षर २० हैं लेकिन प्रणव रहित १९ ही जोड़ा गया है) इस मन्त्र के ऋषि हैं विश्वामित्र, छन्दः है अनुष्टुप्, देवता हैं रामचन्द्र, जं बीज है, शक्ति है नमः। मन्त्रों के वर्ण से न्यासोपरान्त पूर्ववत् ध्यान करे। इस मन्त्र का यजन-पूजनादि कार्य षडक्षरवत् ही होगा। "ॐ रां श्रीं रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम, दशास्यान्तक मां रक्ष देहि में परमा श्रियं" यह ३५ अक्षरात्मक मन्त्र है। यदि बीज अलग करे, तब यह ३२ अक्षरात्मक ही होगा, तथापि सर्वकामना पूरक है।।८७-९२।।

विश्वामित्रो मुनिश्चास्यानुष्टुप्छन्दउदाहृतम्।
देवता रामभद्रोऽत्र बीजं स्वं शक्तिरिन्दिरा।।९३।।

बीजत्रयाद्यैः कुर्वीत पदैः सर्वेण मन्त्रवित्।
पञ्चाङ्गानि च विन्यस्य मन्त्रवर्णानक्रमान्न्यसेत्॥९४॥
मूर्ध्नि भाले दृशोः श्रोत्रे गण्डयुग्मे सनासिके।
आस्ये दोःसन्धियुगले स्तनहृन्नाभिषु क्रमात्॥९५॥
कटौ मेढ्रे पायुपादसन्धिष्वर्णान्न्यसेन्मनोः।
ध्यानार्चनादिकं चास्य पूर्ववत्समुपाचरेत्॥९६॥

इस मन्त्र के ऋषि हैं विश्वामित्र, छन्दः है अनुष्टुप्, देवता हैं रामभद्र, बीज है आदि का स्वबीज 'रां'। शक्ति है इन्दिरा। मन्त्रज्ञ साधक बीजत्रय युक्त पद द्वारा पंचांग न्यास करे तथा क्रमशः मन्त्रवर्ण का भी न्यास करे। मन्त्र के वर्णों का न्यास मस्तक, भाल, नेत्र, कान, कपोल, नासा, बाहु, बाहुमूल, स्तन, हृदय, कटि, लिंग, पादु, चरण सन्धि में मन्त्रवर्ण न्यास करे। ध्यान-पूजनादि पूर्ववत् करे।।९३-९६।।

लक्षत्रयं पुरश्चर्या पायसैर्हवनं मतम्। ध्यात्वा रामं पीतवर्णं जपेल्लक्षं समाहितः॥९७॥
दशांशं कमलैर्हुत्वा धनैर्धनपतिर्भवेत्। तारो माया रमाद्वन्द्वं दाशरथाय हृच्च वै॥९८॥
एकादशाक्षरो मन्त्रो मुन्याद्यर्चास्य पूर्ववत्।
त्रैलोक्यान्ते तु नाथाय हृदन्तो वसुवर्णवान्॥९९॥

इसका पुरश्चरण ३ लाख जप है। इसका दशांश होम पायस से करना निर्देशित है। पीतवर्ण राम का ध्यान करके एक लाख जप समाहित होकर करना चाहिये। जप का १/१० होम कमल से करे। साधक इससे धनाधिप होगा। "ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं दाशरथाय नमः" एक-एकादशाक्षर मन्त्र है। इसके मुनि तथा शेष प्रक्रिया पूर्ववत् ही है। "त्रैलोक्यनाथाय नमः" यह अष्टाक्षर मन्त्र है।।९७-९९।।

अस्यापि पूर्ववत्सर्वं न्यासध्यानार्चनादिकम्।
आञ्जनेयपदान्ते तु गुरवे हृदयान्तिमः॥१००॥
मन्त्रो नवाक्षरोऽस्यापि यजनं पूर्ववन्मतम्। ङेतं रामपद पश्चाद्धृदयं पञ्चवर्णवत्॥१०१॥
मुनिध्यानार्चनं चास्य प्रोक्तं सर्वं षडर्णवत्।
रामान्ते चन्द्रभद्रौ च ङेन्तौ पावकवल्लभा॥१०२॥
मन्त्रौ द्वौ च समाख्यातौ मुन्याद्यर्चादि पूर्ववत्।
वह्निः शेषान्वितश्चैव चन्द्रभूषितमस्तकः॥१०३॥
एकाक्षरो रघुपतेर्मन्त्रः कल्पद्रुमोऽपरः।
ब्रह्मा मुनिः स्याद्गायत्री छन्दो रामोऽस्य देवता॥१०४॥
षड्दीर्घाढ्येन मन्त्रेण षडङ्गानि समाचरेत्। सरयूतीरमन्दारवेदिकापङ्कजासने॥१०५॥
श्यामं वीरासनासीनं ज्ञानमुद्रोपशोभितम्। वामोरुन्यस्ततद्धस्तं सीतालक्ष्मणसंयुतम्॥१०६॥
अवेक्षमाणमात्मानं मन्मथामिततेजसम्। शुद्धस्फटिकसङ्काशं केवलं मोक्षकाङ्क्षया॥१०७॥

इसके ऋषि न्यास पूजनादि सब कुछ पूर्ववत् है। "आञ्जनेय गुरवे नमः" यह नवाक्षर मन्त्र है। इसका भी यजनादि विधान पूर्ववत् है। रामाय नमः पंचाक्षर मन्त्र है। इसके ऋष्यादि तथा अर्चनादि विधान षडक्षर मन्त्रवत् होंगे। रामचन्द्राय स्वाहा तथा रामभद्राय स्वाहा, दोनों मन्त्रों के ऋष्यादि, न्यास तथा पूजा प्रभृति पूर्ववत् हैं। अग्नि (र) शेष (आ) तथा मस्तक चन्द्रभूषित हो, तब यह 'रां' एकाक्षर राममन्त्र कल्पवृक्ष के समान है। इस मन्त्र के ऋषि हैं ब्रह्मा, गायत्री छन्दः है तथा इसके देवता हैं राम। षड्दीर्घयुक्त बीज से षडङ्ग सम्पन्न करे। अब ध्यान कहते हैं—सरयू तीर पर मन्दारवृक्ष के नीचे बने मंडप में कमलों के आसन पर श्याम वर्ण राम वीरासनासीन है। वे ज्ञानमुद्रा से शोभायमान हैं। उनके वाम जंघा पर भगवती सीता आसीन हैं। निकट में लक्ष्मण भी विराजित हैं। वे अपने कन्दर्प के समान कान्तिमय देह को स्वयं ही देख रहे हैं। जो केवल मोक्ष की आकांक्षा रखता है, वह परमात्मा शुद्ध स्फटिक के समान शोभायमान राम का ध्यान करे।।१००-१०७।।

चिन्तयेत्परमात्मानमृतुलक्षं जपेन्मनुम्। सर्व्वं षडर्णवच्चास्य होमनित्यर्चनादिकम्॥१०८॥
वह्निः शेषासनो भान्तः केवलो द्व्यक्षरो मनुः। एकाक्षरोक्तवत्सर्वं मुनिध्यानार्चनादिकम्॥१०९॥
तारमानारमानङ्गचास्त्रबीजैर्द्विवर्णकः। त्र्यक्षरो मन्त्रराजः स्यात्षड्विधः सकलेष्टदः॥११०॥
द्व्यक्षरश्चन्द्रभद्रान्तो द्विविधश्चतुरक्षरः। एकार्णोक्तवदेतेषां मुनिध्यानार्चनादिकम्॥१११॥

इस ध्यान के अनन्तर षड्लक्ष जप करे। शेष हवन पूजनादि षडक्षर मन्त्रवत् ही करना चाहिये। जब वह्नि (र) शेषासनासीन हो (आ) तथा तत्पश्चान्त भान्त (म) हो, तब द्व्यक्षर मन्त्र राम होता है। इसके ऋषि आदि, ध्यान पूजन न्यासादि एकाक्षर मन्त्रवत् ही करे। ओं राम, ह्रीं राम, श्रीं राम, क्लीं राम, रां राम, रामाय फट्—यह सभी त्र्यक्षर मन्त्र (रामाय फट् पंचाक्षर है) सर्वकामना पूरक हैं। द्व्यक्षर मन्त्र के अन्त में जब चन्द्र एवं भद्र जोड़ते हैं, तब दो तरह का चतुरक्षर मन्त्र होता है, जैसे रामचन्द्र, रामभद्र। इनके ऋषि आदि, ध्यान, न्यास पूजादि एक अक्षरवत् हैं।।१०८-१११।।

तारो रामश्चतुर्थ्यन्तो वर्मास्त्रं वह्निवल्लभा। अष्टार्णोऽयं महामन्त्रो मुन्याद्यर्चा षडर्णवत्॥११२॥
तारो मया हृदन्ते स्याद्रामाय प्रणवान्तिमः। शिवोमाराममन्त्रोऽयमष्टार्णः सर्वसिद्धिदः॥११३॥
ऋषिः सदाशिवः प्रोक्तो गायत्री छन्द ईरितम्। शिवोमारामचन्द्रोऽत्र देवता परिकीर्त्तितः॥११४॥
षड्वीर्ययामाय यातु ध्रुवपञ्चार्णयुक्तया। षडङ्गानि विधायाथ ध्यायेद्धृदि सुरार्चितम्॥११५॥
रात्रं त्रिनेत्रं सोमार्द्धधारिणं शूलिनं वरम्। भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे॥११६॥
रामाभिरामां सौन्दर्यसीमां सोमावतं सिनीम्। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरां ध्यायेत्त्रिलोचनाम्॥११७॥

तार (ॐ) चतुर्थ्यन्त राम शब्द (रामाय) वर्मास्त्र (हुं फट्) वह्निवल्लभा (स्वाहा) । मन्त्रोद्धार है ॐ रामाय हुं फट् स्वाहा यह अष्टाक्षर महामन्त्र है। इसके ऋषि तथा अर्चनादि सभी षडक्षरवत् हैं। "ॐ ह्रीं रामाय नमः ॐ" यह मन्त्र शिव, राम, उमा सहित राममन्त्र सर्वसिद्धिप्रद है। इसके ऋषि सदाशिव हैं। गायत्री छन्द है। शिव-उमा-रामचन्द्र देवता हैं। षड्दीर्घ मात्रायुक्त सप्ताक्षर मन्त्र द्वारा षडङ्गन्यास करे। तदनन्तर हृदय में ही देववन्दित श्री राम का, कपर्दी-त्रिशूली सर्वाङ्ग में भस्म लेप लगाने वाले, सोमार्द्धधारी त्रिनेत्र शिव का तथा अत्यन्त अभिराम सौन्दर्य सीमा रूप, चन्द्रभूषण भूषित, पाश, अंकुश, धनुष बाण धारिणी त्रिलोचना देवी उमा का ध्यान करे।।११२-११७।।

एवं ध्यात्वा जपेद्वर्णलक्षं त्रिमधुरान्वितैः। विल्वपत्रैः फलैः पुष्पैस्तिलैर्वा पङ्कजैर्हुनेत्॥११८॥
स्वयमायान्ति निधयः सिद्धयश्च सुरेप्सिताः। तारो माया च भरताग्रजराममनोभवः॥११९॥
वह्निजायाद्वादशार्णो मन्त्रः कल्पद्रुमोऽपरः। अङ्गिराश्च मुनिश्छन्दो गायत्री देवता पुनः॥१२०॥
श्रीरामो भुवनाबीजं स्वाहाशक्तिः समीरितः। चन्द्रैकमुनिभूनेत्रैर्मन्त्रार्णैरङ्गकल्पनम्॥१२१॥

ध्यानपूजादिकं चास्य सर्वं कुर्यात्षडर्णवत्।
प्रणवो हृदयं सीतापते रामश्च ङेन्तिमः॥१२२॥
हनद्वयान्ते वर्मास्त्रं मन्त्रः षोडशवर्णवान्।
अगस्त्योऽस्य मुनिश्छन्दो बृहती देवता पुनः॥१२३॥
श्रीरामोऽहं तथा बीजं रां शक्तिः समुदीरिता।
रामाब्धिवह्निवेदाक्षिवर्णैः पञ्चाङ्गकल्पना॥१२४॥
ध्यानपूजादिकं सर्वमस्य कुर्यात्षडर्णवत्।
तारो हृच्चैव ब्रह्मण्य सेव्याय पदमीरयेत्॥१२५॥
रामायाकुण्डशब्दान्तं तेजसे च समीरयेत्।
उत्तमश्लोकधुर्याय स्वं भृगुः कामिकान्वितः॥१२६॥

दण्डार्पितांङ्घ्रये मन्त्रो रामरामाक्षरो मतः। ऋषिः शुक्रस्तथानुष्टुप्छन्दो रामोऽस्य देवता॥१२७॥

इस प्रकार से ध्यान करके तीन लाख मन्त्र जप के उपरान्त तीस हजार होम त्रिमधुर लिप्त विल्वपत्र, फल, पुष्प, तिल अथवा कमल से करे। इस प्रकार साधक के पास देवताओं द्वारा ईप्सित निधि तथा सिद्धि स्वयं आ जाती है। "ॐ ह्रीं भरताग्रजराम क्लीं स्वाहा" यह द्वादशाक्षर राममन्त्र मानो साधक हेतु कल्पवृक्ष है। इसके ऋषि हैं अंगीरा। गायत्री छन्दः है, देवता हैं श्रीराम। बीज है भुवना, शक्ति है स्वाहा। द्वादश मन्त्राक्षरों से अंगन्यास करके शेष प्रक्रिया षडक्षर मन्त्र विधिवत् करे। "ॐ सीतापति रामाय नमः हन हन हुं फट्" यह षोडशाक्षर मन्त्र है। इसके ऋषि हैं अगत्स्य, छन्दः है बृहती, देवता हैं श्रीराम। बीज है हं, शक्ति है रां। मन्त्र के १६ अक्षरों से पंचांगन्यास करके शेष क्रिया ध्यानादि षडक्षर मन्त्र विधिवत् करे। तदनन्तर ॐ नमः ब्रह्मण्य सेव्याय रामायाकुण्डतेजसे। उत्तम श्लोक धुर्याय न्यस्त दण्डार्पिताङ्घ्रये" यह ३३ अक्षरात्मक मन्त्र है। इसके ऋषि हैं शुक्र, छन्दः है अनुष्टुप् तथा श्रीराम देवता हैं।।११८-१२७।।

दण्डार्पितां पञ्चाङ्गं कुर्याच्छेषं षडर्णवत्। लक्षं जपो दशांशेन जुहुयात्पांयसैः सुधीः॥१२८॥

सिद्धमन्त्रस्य भुक्तिः स्यान्मुक्तिः पातकनाशनम्।
आदौ दाशरथायान्ते विद्महे पदमुच्चरेत्॥१२९॥
ततः सीतावल्लभाय धीमहीति समुच्चरेत्।
तन्नो रामः प्रचो वर्णो दयादिति च संवदेत्॥१३०॥

एषोक्ता रामगायत्री सर्वाभीष्टफलप्रदा। पद्मासीतापदं ङेन्तं ठद्वयान्तः षडक्षरः॥१३१॥

सभी मन्त्र पादों से पंचांगन्यास करके बाकी कार्य षडक्षर से विधिवत् करे। एक लाख जपोपरान्त दस हजार होम पायस द्वारा सुधी साधक करे। मन्त्र सिद्धि से भुक्ति, मुक्ति प्राप्त होती है। पाप नाश होता है। ''दाशरथाय विद्महे, सीतावल्लभाय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात्'' यह राम गायत्री है। यह सर्वकामप्रदा है। इसे राम ने ही प्रकाशित किया था। ''श्रीं सीतायै स्वाहा'' षडक्षर सीता मन्त्र है।।१२८-१३१।।

वाल्मीकिश्च मुनिश्छन्दो गायत्री देवता पुनः।
सीता भगवती प्रोक्ता श्रीं बीजं वह्निसुन्दरी॥१३२॥
शक्तिः षड्दीर्घयुक्तेन बीजेनाङ्गानि कल्पयेत्।
ततो ध्यायन्महादेवीं सीतां त्रैलोक्यपूजिताम्॥१३३॥
तप्तहाटकवर्णाभां पद्मयुग्मं करद्वये। सद्रत्नभूषणस्फूर्जद्दिव्यदेहां शुभात्मिकाम्॥१३४॥
नानावस्त्रां शशिमुखीं पद्माक्षीं मुदितान्तराम्।
पश्यन्तीं राघवं पुण्यं शय्यार्घ्यां षड्गुणेश्वरीम्॥१३५॥
एवं ध्यात्वा जपेद्वर्णलक्षं मन्त्री दशांशतः।
जुहुयात्कमलै फुल्लैः पीठे पूर्वोदिते यजेत्॥१३६॥
मूर्ति सङ्कल्प्य मूलेन तस्यामावाह्य जानकीम्।
सम्पूज्य दक्षिणे राममभ्यर्च्याग्रेऽनिलात्मजम्॥१३७॥
पृष्ठे लक्ष्मणमभ्यर्च्य षट्कोणेष्वङ्गपूजनम्।
पत्रेषु मन्त्रिमुख्यांश्च बाह्ये लोकेश्वरान्पुनः॥१३८॥
वज्राद्यानपि सम्पूज्य सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
जातिपुष्पैश्चन्दनाक्तै राजवश्याय होमयेत्॥१३९॥
कमलैर्धनधान्याप्तिर्नीलाब्जैर्वशयन् जगत्।
बिल्वपत्रैः श्रियःप्राप्त्यै दूर्वाभी रोगशान्तये॥१४०॥

इनके ऋषि हैं वाल्मीकि, गायत्री छन्द है। देवता हैं देवी सीता, बीज हैं श्रीं, शक्ति है स्वाहा। षट्दीर्घ मात्रा से युक्त बीजमन्त्र से अंगन्यास करने के पश्चात् त्रैलोक्य में पूजित, तप्त स्वर्ण कान्तियुक्त, दोनों हाथ में कमल धारण करने वाली, उत्तम चमकते रत्नों से शोभित, दिव्य शरीर से शोभित, शुभात्मिका, पद्मनेत्रा, शशि के समान मुख वाली, नानावस्त्रधारिणी, मुदित अन्तरात्मावाली देवी पुण्यमयी शय्या पर आधीन होकर राघव के मुखारविन्द का अवलोकन कर रही हैं। ऐसी षड्गुणेश्वरी सीता का ध्यान करने के उपरान्त ६ लाख मन्त्र जप करे। तदनन्तर ६०००० होम खिले कमलों द्वारा करना चाहिये। इसके पश्चात् पीठ पर मूलमन्त्र द्वारा मूर्त्ति संकल्पित करके वहीं सीता का आवाहन करना चाहिये। प्रतिमा के दक्षिण की ओर राम की, आगे की ओर (सम्मुख) हनुमान की तथा पीठ की ओर लक्ष्मण के पूजनोपरान्त षट्कोण में अंग देवतागण की पूजा करके पत्रों में मुख्य मन्त्रियों की तथा उसके बाहर लोकपालगण की पूजा के उपरान्त उनके वज्रादि आयुधों की

पूजा करके साधक सभी सिद्धियों का अधीश्वर हो जाता है। चन्दन लिप्त जाती पुष्प द्वारा होम करने से राजा वशीभूत हो जाते हैं। कमल से होम करने का फल है धन-धान्य प्राप्ति तथा नीलकमल से होम करने पर जगत् वशीभूत हो जाता है। बिल्वपत्र से होम द्वारा श्री प्राप्ति होती है तथा दूर्वा से होम करने से रोग शान्त हो जाते हैं।।१३२-१४०।।

किं बहूक्तेन सौभाग्यं पुत्रान्पौत्रान्परं सुखम्।
धनं धान्यं च मोक्षं च सीताराधनतो लभेत्॥१४१॥
शक्रः सेन्दुर्लक्ष्मणाय हृदयं सप्तवर्णवान्।
अगस्त्योऽस्य मुनिश्छन्दो गायत्री देवता पुनः॥१४२॥
लक्ष्मणाख्यो महावीरश्चाढ्यं हृद्बीजशक्तिके।
षड्दीर्घाढ्येन बीजेन षडङ्गानि समाचरेत्॥१४३॥
द्विभुजं स्वर्णरुचिरतनुं पद्मनिभेक्षणम्। धनुर्बाणकरं रामसेवासंसक्तमानसम्॥१४४॥
ध्यात्वैवं प्रजपेद्वर्णलक्षं मन्त्री दशांशतः। मध्वाक्तैः पायसैर्हुत्वा रामपीठे प्रपूजयेत्॥१४५॥

इस विषय में अधिक क्या कहा जाये? साधक को सौभाग्य, पुत्र, पौत्र तथा परम सुख मिलता है। सीता की आराधना द्वारा धन-धान्य तथा मोक्ष पर्यन्त प्राप्त होता है। ''लं लक्ष्मणाय नमः'' सप्ताक्षर मन्त्र है। इसके ऋषि हैं अगत्स्य, छन्दः है गायत्री तथा देवता हैं लक्ष्मण तथा हनुमान। बीज है लं, शक्ति है नमः। षड्दीर्घयुक्त बीज मन्त्र से षडन्यास करके ध्यान करे। ध्यान लक्ष्मण द्विभुज, स्वर्णवत् उत्तम शरीर वाले, पद्मनेत्र हैं। वे धनुष-बाणधारी तथा सतत् रामसेवा में निरत मन वाले हैं। यह ध्यान करने के पश्चात् सात लाख मन्त्र जपना चाहिये। (सप्ताक्षर मन्त्र है। अतः जप भी सात लाख होगा)। तत्पश्चात् ७०००० होम मधु मिश्रित पायस से करे। उनकी पूजा पूर्वोक्त रामपीठ में राम पूजनवत् ही करनी चाहिये।।१४१-१४५।।

रामवद्यजनं चास्य सर्वसिद्धिप्रदो ह्ययम्।
साकल्यं रामपूजाया यदीच्छेन्नियतं नरः॥१४६॥
तेन यत्नेन कर्त्तव्यं लक्ष्मणार्चनमादरात्।
श्रीरामचन्द्रभेदास्तु बहवः सन्ति सिद्धिदाः॥१४७॥

तब यह मन्त्र सर्वसिद्धिदाता हो जाता है। जो सादर रामपूजा सर्वाङ्ग सम्पन्न करने का इच्छुक है, वह लक्ष्मणार्चन अवश्य करे। राम के अनेक उपासना भेद हैं, जो सिद्धिदायक हैं।।१४६-१४७।।

तत्साधकैः सदा कार्यं लक्ष्मणाराधनं शुभम्।
अष्टोत्तरसहस्त्रं वा शतं वा सुसमाहितैः॥१४८॥
लक्ष्मणस्य मनुर्जप्यो मुमुक्षुभिरतन्द्रितैः।
अजप्त्वा लक्ष्मणमनुंराममन्त्रान् जपन्ति ये॥१४९॥
न तेषां जायते सिद्धिर्हानिरेव पदे पदे। यो जपेल्लक्ष्मणमनुं नित्यमेकान्तमास्थितः॥१५०॥

मुच्यते सर्वपापेभ्यः सर्वान्कामानवाप्नुयात्।
जयप्रधानो मन्त्रोऽयं राज्यप्राप्त्यैकसाधनम्॥१५१॥

साधक सदा शुभ लक्ष्मणार्चन करे। वह लक्ष्मण का मन्त्र मुमुक्षुत्व लाभार्थ आलस्यरहित होकर १००८ किंवा १०८ बार समाहित चित्त से नित्य जपे। जो लक्ष्मणमन्त्र जप किये बिना राममन्त्र का जप करता है, उसे सिद्धि मिल ही नहीं सकती, अपितु पग-पग में उसे सिद्धिहानि ही मिलती है। जो नित्य एकान्तस्थ होकर लक्ष्मणमन्त्र जप करते हैं, वे सर्वपाप रहित होकर समस्त कामनाफल लाभ कर लेते हैं। यह मन्त्र जय प्राप्ति का साधन है। राज्यलाभ का भी एक मात्र साधन है।।१४८-१५१।।

नष्टराज्याप्तये मन्त्रं जपेल्लक्षं समाहितः।
सोऽचिरान्नष्टराज्यं स्वं प्राप्नोत्येव न संशयः॥१५२॥

ध्यायन्राममयोध्यायामभिषिक्तमनन्यधीः। पञ्चायुतं मनुं जप्त्वा नष्टराज्यमवाप्नुयात्॥१५३॥

इसके जप द्वारा नष्ट राज्य मिलता है। इस हेतु इसे समाहित होकर एक लाख जपे। उसे नष्ट राज्य मिलकर रहेगा, इसमें संशय नहीं है। अनन्यतापूर्वक अयोध्या में अभिषिक्त हो रहे राम का ध्यान करते हुये जो साधक इस मन्त्र का जप ५०००० करता है, उसे नष्टराज्य लाभ हो जाता है।।१५२-१५३।।

नागपाशविनिर्मुक्तं ध्यात्वालक्ष्मणमादरात्।
अयुतं प्रजपेन्मन्त्रं निगडान्मुच्यते ध्रुवम्॥१५४॥

वातात्मजेनानीताभिरोषधीभिर्गतव्यथम्। ध्यात्वा लक्षं जपन्मन्त्रमल्पमृत्युं जयेद्ध्रुवम्॥१५५॥

घातयन्तं मेघनादं ध्यात्वा लक्षं जपेन्मनुम्। दुर्जयं वापि वेगेन जयद्रिपुकुलं महत्॥१५६॥

नागपाश से मुक्तिलाभ कर रहे लक्ष्मण के ध्यानोपरान्त जो साधक दस हजार लक्ष्मण मन्त्र जप करता है, वह कारागृह के निगड़ बन्धन से मुक्त हो जाता है। जो वायु पुत्र हनुमान् द्वारा लाई गई द्रोणाचलस्थ औषधि सेवन से स्वस्थ होने वाले लक्ष्मण का ध्यान करते हुये एक लाख मन्त्र जप करेगा, उसे दुर्जय तथा महाबली शत्रुकुल पर विजय प्राप्त होगी।।१५४-१५६।।

ध्यात्वा शूर्पणखानासाछेदनोद्युक्तमानसम्।
सहस्रं प्रजपेन्मन्त्रं पुरुहूतादिकान् जयेत्॥१५७॥

रामपादाब्जसेवार्थं कृतोद्योगमथो स्मरन्। प्रजपल्लँक्षमेकान्ते महारोगात्प्रमुच्यते॥१५८॥

जो साधक शूर्पणखा के नासिका छेदनार्थ उद्यत् लक्ष्मण का ध्यान करके एक हजार मन्त्र जप करता है, वह तो इन्द्र तक पर विजय लाभ कर लेगा। जो राम के चरण सेवार्थ उद्यत लक्ष्मण का चिन्तन करके निर्जन स्थल में यह मन्त्र एक लाख जपेगा, उसे महारोग से मुक्ति मिलेगी।।१५७-१५८।।

त्रिमासं विजिताहारो नित्यं सत्पसहस्रकम्।
अष्टोत्तरशतैः पुष्पैर्निश्छिद्रैः शातपत्रकैः॥१५९॥

पूजयित्वा विधानेन पायसं च सशर्करम्। निवेद्य प्रजपेन्मन्त्रं कुष्ठरोगात्प्रमुच्यते॥१६०॥

जो मासत्रय पर्यन्त परिमित तथा विहित आहार करके नित्य सात हजार लक्ष्मण मन्त्र का जप करता है तथा नित्य १०८ छिद्रादि दोष रहित कमलपुष्प से सविधि पूजन करके खीर एवं शर्करा का नैवेद्य अर्पित करता है, उसे कुष्ठ रोग से मुक्ति मिल जाती है।।१५९-१६०।।

विजने विजिताहारः षण्मासं विधिनामुना।
क्षयरोगात्प्रमुच्येत सत्यं सत्यं न संशयः।।१६१।।
अभिमन्त्र्य जलं प्रातर्मन्त्रेण त्रिः समाहितः।
त्रिसन्ध्यं वा पिबेन्नित्यं मुच्यते सर्वरोगतः।।१६२।।

एवंविध विजन प्रदेश में परिमित विहित आहार करते हुये सविधि ६ मास तक जप करेगा, उसे क्षय रोग से मुक्ति मिलेगी। यह सत्य है तथा निःसंशय है। नित्य प्रातः समाहित चित्त से इसे मन्त्र से नित्य तीन बार अभिमन्त्रित उस जल को तीनों सन्ध्याकाल में पान करेगा, उसे सभी रोगों से मुक्तिलाभ होगा।।१६१-१६२।।

दारिद्र्यं च पराभूतं जायते धनदोपमः। विषादिदोषसंस्पर्शो न भवेत्तु कदाचन।।१६३।।
मनुना मन्त्रितैस्तोयैः प्रत्यहं क्षालयेन्मुखम्।
मुखनेत्रादिसम्भूताञ्जयेद्रोगांश्च दारुणान्।।१६४।।

इस कार्य से साधक की दरिद्रता का भी निवारण हो जाता है। वह तो कुबेर जैसा हो जाता है। उसे विष प्रभृति दोषों का संस्पर्श कदापि नहीं होता। इस मन्त्र से मन्त्रित जल से नित्य मुख धोना चाहिये। इस कार्य से उसके मुख, नेत्र आदि में उत्पन्न भयानक रोग भी नष्ट हो जाते हैं।।१६३-१६४।।

पीत्वाभिमन्त्रितं त्वंभः कुक्षिरोगान् जयेद्ध्रुवम्।
लक्ष्मणप्रतिमां कृत्वा दद्याद्भक्त्या विधानतः।।१६५।।
स सर्वेभ्योऽथ रोगेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।
कन्यार्थी विमलापाणिग्रहणासक्तमानसः।।१६६।।
ध्यायन् लक्षं जपेन्मन्त्री अब्जैर्हुत्वा दशांशतः।
ईप्सितां लभते कन्यां शीघ्रमेव न संशयः।।१६७।।

इससे अभिमन्त्रित जल को पीने से समस्त उदर रोग नष्ट हो जाते हैं। इसमें संशय नहीं है। जो साधक सुन्दरी विमला कन्या से विवाह की इच्छा रखता हो, वह लक्ष्मण का ध्यान करके एक लाख जप करे तथा कमलों से १०००० होम करे। यह निःसंदिग्ध है कि वह शीघ्र वांछित कन्या प्राप्त करेगा।।१६५-१६७।।

दीक्षितं जृम्भणास्त्राणां मन्त्रेषु नियतव्रतम्।
ध्यात्वा च विधिवन्नित्यं जपेन्मासत्रयं मनुम्।।१६८।।
पूजापुरःसरं सप्तसहस्त्रं विजितेन्द्रियः। सर्वासामपि विद्यानां तत्त्वज्ञो जायते नरः।।१६९।।
विश्वामित्रक्रतुवरे कृताद्भुतपराक्रमम्। ध्यायंल्लक्षं जपेन्मन्त्रं मुच्यते महतो भयात्।।१७०।।

जो इन्द्रिय संयम करके जंभाई लाने वाले अस्त्रों की दीक्षा से युक्त महाव्रती लक्ष्मण का ध्यान करता

नित्य सात हजार लक्ष्मण मन्त्र जप तीन माह तक करेगा, वह समस्त विद्या का ज्ञाता होगा। जो साधक विश्वामित्र के यज्ञ में अद्‌भुद पराक्रम प्रदर्शन करने वाले लक्ष्मण का ध्यान करके एक लाख मन्त्र जप करेगा, वह महाभय से मुक्त हो जायेगा।।१६८-१७०।।

कृतनित्यक्रियः शुद्धस्त्रिकालं प्रजपेन्मनुम्।
सर्वपापविनिर्मुक्तो याति विष्णोः परं पदम्॥१७१॥
दीक्षितो विधिवन्मत्री गुणैर्विगतकल्मषः।
स्वाचारनियतो दान्तो गृहस्थी विजितेन्द्रियः॥१७२॥
ऐहिकाननपेक्ष्यैव निष्कामो योऽर्चयेद्विभुम्।
स सर्वान्पुण्यपापौघान्दग्ध्वा निर्मलमानसः॥१७३॥
पुनरावृत्तिरहितः शाश्वतं पदमश्नुते। वाञ्छितान् लब्ध्वा भुक्त्वा भोगान् मनोगतान्॥१७४॥

नित्य कर्मों द्वारा शुद्ध होकर जो साधक त्रिकाल यह मन्त्र जपता है, उसे अखिल पापों से छुटकारा मिलता है तथा मृत्यु के पश्चात् वह वैकुण्ठलोक गमन करता है। जो मन्त्री साधक सविधि इस मन्त्र से दीक्षित होकर, कल्मषरहित होकर, स्वाचार निरत, दान्त, गृहस्थी, इन्द्रियजित् होकर इस लोक की कोई कामना न रखते हुये निष्काम भावना के साथ इन प्रभु की अर्चना करता है, वह समस्त पुण्य-पाप को दग्ध करके निर्मल मन हो जाता है। उसे आवागमन रहित शाश्वत पद की प्राप्ति होती है। वह वांछित लाभ करता है, मनोगत भोगों का भोग प्राप्त करता है।।१७१-१७४।।

जातिस्मरश्चिरं भूत्वा याति विष्णोः परं पदम्। निद्राचन्द्रान्विता पश्चाद्भरताय हृदन्तिमः॥१७५॥
सप्ताक्षरो मनुश्चास्य मुन्याद्यर्चादि पूर्ववत्। बकः सेन्दुश्च शत्रुघ्नपरं ङेन्तं हृदन्तिमः॥१७६॥
सप्ताक्षरोऽयं शत्रुघ्नमन्त्रः सर्वेष्टसिद्धिदः॥१७७॥

इति श्रीबृहन्नारदीयपुराणे पूर्वभागे बृहदुपाख्याने सनत्कुमारविभागे तृतीयपादे रामाद्युपासना-वर्णनं नाम त्रिसप्ततितमोऽध्यायः॥७३॥
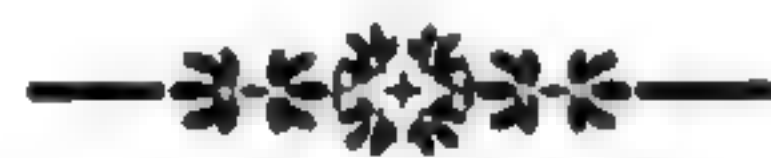
वह पूर्वजन्मस्मृतियुक्त रहता है तथा विष्णु के परमपद की उसे प्राप्ति होती है। "भं भरताय नमः" यह भरत का सप्ताक्षर मन्त्र है। इसके मुनि आदि पूर्ववत् हैं। "शं शत्रुघ्नाय नमः" सप्ताक्षर शत्रुघ्न मन्त्र शत्रुनाशक तथा सर्वसिद्धिप्रद है।।१७५-१७७।।

।।७३वां अध्याय समाप्त।।

❖❖❖